अन्तर-शुद्धि के सोपान

एक उद्धरण

मैं आपको एक घटना बताती हूँ जो आज सुबह घटित हुई। मैं आश्रम के एक बरामदे में से गुज़र रही थी। वहाँ एक कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ था। मैंने झाँककर देखा, बिस्तर पर किताबों का ढेर लगा था। किताबों और काग़ज़ों के ढेरों पुलिन्दे थे। मुझे बड़ा कौतूहल हुआ।

मैं कुछ देर वहाँ खड़ी रही, फिर मैंने धीरे-से दरवाज़ा थपथपाकर उन सज्जन का ध्यान आकर्षित किया जो उन दिनों उस कमरे में रह रहे थे। वे एक प्रोफ़ेसर थे। हाथों में बहुत-सी किताबें लिए वे झुके खड़े थे। थपथपाहट सुनकर उन्होंने ऊपर देखा तो उनका चश्मा खिसककर नाक पर आ गया। एक असली प्रोफ़ेसर की भाँति चश्मे के शीशों के ऊपर से मेरी ओर देखकर उन्होंने कहा, "ओह, ओह!"

मैंने उनका हाल-चाल पूछा। उन्होंने बहुत भद्रता से उत्तर दिया। वे मुझे बताने लगे कि उन्हें कैसा महसूस हो रहा है और उन दिनों उनके जीवन में क्या चल रहा है। जब वे बात कर रहे थे तो मुझे अचानक शिरडी के साईं बाबा का चेहरा दिखाई दिया। जब मैंने उनका चेहरा देखा तो मुझे याद आया कि उस दिन सुबह ध्यान से बाहर आते समय बिलकुल ऐसा ही हुआ था।

मुझे साईं बाबा का मुखमण्डल दिखाई दिया था—अत्यन्त उज्ज्वल, दमकता हुआ श्वेत, देदीप्यमान। साईं बाबा ने मुझसे कहा था कि मैं उनके निवास-स्थान, शिरडी में गाई जाने वाली प्रातःकालीन "पादुका आरती" गाऊँ।

आपमें से कुछ लोगों ने शायद शिरडी के साईं बाबा के विषय में नहीं सुना होगा। वे एक महान सन्त थे जो इस शताब्दी के आरम्भ में, भारत के महाराष्ट्र राज्य में रहते थे। लाखों-करोड़ों लोग आज भी शिरडी की यात्रा करते हैं जहाँ उनकी समाधि है और अनेक लोगों को उनके अद्भुत आशीर्वाद मिलते हैं। साईं बाबा के विषय में सोचने-भर से ही उनके आशीर्वाद मिल जाते हैं।

मेरे ध्यान में प्रकट होकर जब उन्होंने मुझसे वह प्रार्थना गाने को कहा तो मैंने खेदपूर्वक उत्तर दिया, "मुझे वह कण्ठस्थ नहीं है।" साईं बाबा फिर से बोले, "गाओ!"

सो, मैं अपने ध्यान में उस काग़ज़ को खोजने लगी जिस पर वह प्रार्थना लिखी होनी चाहिए थी। मुझे वह काग़ज़ कहीं नहीं मिला। यह सब करते-कराते मैं ध्यान से बाहर आ गई।

अब, कुछ घण्टों बाद, जब मैं उन प्रोफ़ेसर के दरवाज़े पर खड़ी हुई थी तब साईं बाबा का चेहरा फिर से सामने आ गया। वे प्रोफ़ेसर बड़ी मृदुलता, शालीनता मिठास व प्रेम के साथ बातें कर रहे थे और मैं उनके चेहरे पर नज़र आता साईं बाबा का चेहरा देख रही थी। मन ही मन मैंने साईं बाबा से पूछा, "आज, आप इस प्रकार क्यों प्रकट हो रहे हैं?"

और उनका उत्तर था, "अभय। मैं लोगों को यही तो देता हूँ : अभय।"

जब प्रोफ़ेसर की बात समाप्त हुई तो साईं बाबा का चेहरा भी ओझल हो गया। प्रोफ़ेसर से विदा लेकर मैं चल पड़ी। साईं बाबा अवश्य ही यह जानते होंगे कि मैं आज रात को आप सब से अभय के विषय में बात करने वाली हूँ।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय १ "अभयम्," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. १४-१५।